जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – जुलाई 2024 ।। अंक – 48 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

जीविकोपार्जन के विभिन्न साधनों से बढ़ाई अपनी आय (पृष्ठ – 02)

उद्यमिता अपनाकर संगीता में आई आत्मनिर्भरता (पृष्ठ – 03)

जायका जीविका कृषि उत्पादक कम्पनी से सशक्त हो रही हैं किसान दीदियाँ (पृष्ठ – 04)

जीविका के प्रयास से खेती को लाभकारी बना रही जीविका दीदियाँ

जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़े परिवारों को उन्नत विधि से खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे खेती को अत्यंत लाभकारी बनाया जा सके। इसके लिए जीविका द्वारा अनेकों प्रयास किए जा रहे हैं। इनमें मुख्य रूप से समूह से जुड़े किसान परिवारों को धान, गेहूँ, मक्का एवं सब्जियों की खेती के लिए उन्नत विधि अपनाने हेतु प्रोत्साहन, उनका प्रशिक्षण, खेती हेतु पूँजी की उपलब्धता, गुणवत्तापूर्ण बीज एवं खाद की उपलब्धता, किसानों के बीच कृषि संबंधी नई जानकारियों एवं तकनीक का प्रसार, आधुनिक कृषि यंत्रों तक उनकी आसान पहुँच एवं बाजार से जुड़ाव जैसे प्रयास किये जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त समूह से जुड़े छोटे एवं सीमांत किसान परिवारों को ऐसी फसलों की खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिनकी बाजार में अधिक मांग हो रही है।

महिला किसानों को निम्न सुबिधाएँ उपलब्ध हो रहा है :

1. **किसानों का शिक्षण–प्रशिक्षण :–** समूह से जुड़े किसान परिवारों को उन्नत विधि से कृषि गतिविधि के बारे में जानकारी देने एवं प्रशिक्षण उपलब्ध कराने हेतु प्रत्येक जिले में किसान प्रशिक्षण–सह–सूचना केंद्र (एफ. टी.आई.सी.) संचालित है।

2. **नियमित तकनीकी सहयोग :–** जीविका समूह से जुड़े किसान परिवारों को खेती कार्य में नियमित रूप से तकनीकी सहयोग प्रदान करने हेतु ग्राम संसाधन सेवी (वी.आर.पी.) कार्य करते हैं। प्रत्येक वी.आर.पी. द्वारा दो से तीन ग्राम संगठनों से जुड़े किसानों को समय–समय पर तकनीकी मदद की जाती है।

3. **कृषि यंत्र बैंक से आधुनिक कृषि उपकरणों की उपलब्धता :–** किसानों को उन्नत विधि से खेती करने के लिए आधुनिक कृषि यंत्रों की आवश्यकता होती है। इसके लिए जीविका के संकुल संघ स्तर पर कृषि यंत्र बैंक (सी. एच.सी.) की स्थापना की गई है। यहाँ खेतों की जुताई, फसलों की बुनाई, कटाई एवं फसलों की तैयारी से जुड़े आधुनिक उपकरण उपलब्ध हैं। इसमें मुख्य रूप से ट्रैक्टर, जीरो टिलेज, थ्रेसर, रोटावेटर सहित विभिन्न प्रकार के आधुनिक कृषि यंत्र उपलब्ध हैं। संकुल संघ से जुड़े किसान इन उपकरणों को आवश्यकतानुसार भाड़े पर लेकर खेती के काम में उपयोग करते हैं। इससे छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए आधुनिक कृषि यंत्र का प्रयोग करना आसान हुआ है।

4. **बाजार से जुड़ाव :–** समूह से जुड़े परिवारों द्वारा उत्पादित कृषि उत्पादों को बेहतर मूल्य दिलाने और उत्पादकों को संगठित करने के मकसद से कृषि उत्पादक समूह (पी.जी.) का गठन किया जाता है। उत्पादक समूह से जुड़े परिवारों को उनके कृषि उत्पादों का बेहतर मूल्य दिलाने, खाद–बीज उपलब्ध कराने तथा किसानों का उन्मुखीकरण और तकनीकी सहयोग करने जैसे कार्य किये जाते हैं।

5. **गुणवत्तापूर्ण बीज एवं खाद की उपलब्धता :–** उत्पादक कंपनियों एवं कृषि उद्यमियों द्वारा गुणवत्तापूर्ण बीज एवं खाद की उपलब्धता करायी जा रही है जिससे उन्हें उचित मूल्य पर ससमय बीज एवं खाद की उपलब्धता हो रही है।

6. **जैविक खेती को बढ़ावा :–** वर्तमान समय में बेहतर स्वास्थ्य के मद्देनजर जैविक उत्पादों की मांग बढ़ रही है। ऐसे में जैविक खाद्य वस्तुओं की अच्छी कीमत मिल रही है। यही कारण है कि जीविका के द्वारा समूह से जुड़े किसानों को जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। जैविक विधि से खेती हेतु उन्हें जैविक खाद अर्थात वर्मी कम्पोस्ट बनाने एवं इसके उपयोग की विधि बताई जाती है। रासायनिक खादों की जगह जैविक खाद का प्रयोग करने से किसानों को न केवल खेती की लागत में कमी आती है बल्कि इससे खेत की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती है। इसी तरह जैविक कीटनाशक के रूप में नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, धन जीवामृत, जीवामृत, सहजन अर्क आदि तैयार करने एवं इसकी उपयोग की विधि बताई जाती है।

जीविका के प्रयासों का ही परिणाम है कि आज बड़ी संख्या में जीविका समूह से जुड़े किसान परिवार आधुनिक विधि से खेती की ओर उन्मुख हुए हैं। इससे खेती से उनकी आय में बढ़ोतरी हो रही है।

जीविकोपार्जन के विभिन्न साधनों से बढ़ाई अपनी आय

परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हो, हिम्मत और लगन से हालात बदले जा सकते हैं। भागलपुर जिला के बिहपुर प्रखंड स्थित मड़वा गाँव की रंजना कुमारी ने जीविका के सहयोग एवं अपने हौसले से उद्यमी बनकर अपने जीवन को संवारा है। समूह के प्रोत्साहन, प्रशिक्षण एवं वित्तीय मदद से इन्होंने किराना व्यवसाय, गाय पालन एवं दीदी की नर्सरी जैसी जीविकोपार्जन गतिविधियों के माध्यम से अपने परिवार की सालाना आमदनी बढ़ाकर 2 लाख रुपये से ज्यादा कर ली है। रंजना कुमारी की उद्यमिता की कहानी अब अन्य दीदियों के लिए प्रेरणास्रोत है।

रंजना कुमारी 25 मार्च 2016 को विश्वकर्मा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी। समूह में जुड़ने के बाद उन्होंने अपने घर की आय बढ़ाने के लिए स्वारोजगार शुरू करने का मन बनाया। उन्होंने समूह से 25 हजार रुपये ऋण लेकर किराना दुकान शुरू किया। इससे इन्हें रोजाना 200 से 300 रुपये की आमदनी होने लगी। दुकान की आय से इन्होंने एक गाय खरीदी। गाय पालन करने से इनके घर दूध उत्पादन होने लगा है, जिसे बेचकर कर वह प्रतिदिन करीब 150 रुपये की कमाई कर लेती है।

रंजना कुमारी वर्ष 2019 में 'दीदी की नर्सरी' गतिविधि से जुड़ी। इसके बाद इन्हें वन विभाग द्वारा नर्सरी गतिविधियों के बारे में प्रशिक्षित किया गया। वन विभाग से प्रशिक्षण एवं जीविका के सहयोग से इन्होंने नर्सरी लगाई और पौधे तैयार किये। इनके द्वारा वर्ष 2021 में 7500 पौधे, 2022 में 13,000 एवं 2023 में 19,800 पौधे वन विभाग को उपलब्ध कराए गए। इन पौधों को बदले पहले दो साल तक 10 रुपये प्रति पौधे की दर से भुगतान किया गया। वहीं तीसरे साल से इन्हें 20 रुपये प्रति पौधे की दर से भुगतान किया जा रहा है। इस प्रकार रंजना कुमारी को अब तक कुल 6 लाख रुपये से ज्यादा की आमदनी हो चुकी है। हालांकि नर्सरी हेतु बीज, पॉलीथिन बैग, मजदूरी आदि पर कुल 2,80,000 रुपये खर्च हुए हैं। इस प्रकार पिछले चार साल में इन्हें नर्सरी से कुल 3,20,000 रुपये का मुनाफा हुआ। जीविकोपार्जन के विभिन्न साधनों को अपनाने से रंजना की वार्षिक आमदनी अब 2 लाख 25 हजार रुपये से अधिक हो गई है। इससे उनका परिवार आर्थिक सबलता की ओर अग्रसर है।

शून्य से शुरू किया था सफर, अब बनी लखपति दीदी

रानी देवी ने शून्य से सफ़र शुरू करते हुए आज एक लखपति दीदी के रूप में अपनी पहचान बना ली है। कभी एक–एक रुपये के लिए मोहताज रहने वाली रानी ने अपनी मेहनत एवं जीविका समूह के सहयोग से लाखों रुपये की परिसंपत्ति खड़ी कर ली है। रानी दीदी लखीसराय जिला अंतर्गत बड़हिया प्रखंड स्थित जैतपुर पंचायत के गढ़टोला गाँव की निवासी है। इनके पति चुनचुन तांती टेंट हाउस में मजदूरी करते थे। हालांकि इससे उन्हें अपने 6 सदस्यों वाले परिवार का पेट भरना भी मुश्किल हो रहा था।

रानी देवी आरती जीविका स्वयं सहायता समूह से वर्ष 2018 में जुड़ी थी। समूह में जुड़ने के बाद वह 10 रुपये साप्ताहिक बचत करने लगी। इसी बीच उन्होंने समूह की मदद से स्वरोजगार शुरू करने का निर्णय लिया। तदुपरांत समूह से 1 लाख रुपये ऋण लेकर अपने पति के लिए टेंट हाउस का व्यवसाय शुरू किया। टेंट हाउस व्यवसाय से इन्हें अच्छी आमदनी होने लगी, इससे इन्होंने समूह से लिए ऋण वापस कर दी है। टेंट हाउस व्यवसाय के साथ–साथ इन्होंने किराना दुकान भी शुरू किया है। इसके लिए इन्होंने समूह से पुन : 50 हजार रुपये ऋण लिया। दुकान की आमदनी से वह समूह से लिए ऋण की नियमित वापसी कर रही है। इसके अलावा इन्होंने एक सिलाई मशीन भी खरीदी है। अब वह किराना दुकान में ही सिलाई केंद्र भी चलाती है। इससे इनकी आमदनी बढ़ गई है। रानी अपने टेंट हाउस व्यवसाय, किराना दुकान एवं सिलाई केंद्र से प्रतिमाह कुल मिलाकर लगभग 10 से 15 हजार रुपये अर्जित कर लेती है। वर्तमान में टेंट हाउस में करीब 2 लाख रुपये से ज्यादा की परिसंपत्ति है। इसके अलावा दुकान में भी लगभग 80 हजार रुपये की परिसंपत्ति है। इस प्रकार अपने घर की आमदनी बढ़ाकर रानी दीदी अब लखपति दीदी की श्रेणी में शुमार हो गई है। जीविका समूह की बदौलत रानी देवी के जीवन में खुशहाली आई है।

उद्यमिता अपनाकर संगीता में आई आत्मनिर्भरता

"मेहनत और लगन से कोई कार्य करने की आदत बन जाए तो सफलता निरतंर मिलने लगती है।" अरवल जिला अन्तर्गत अरवल सदर प्रखंड की रहने वाली संगीता देवी एक मेहनतकश और लगनशील महिला है। राखी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर वह किराना दुकान के साथ–साथ अन्य रोजगार करके लाखों रुपये अर्जित कर रही है। संगीता देवी के परिवार में उनके पति के अलावे एक बेटा और 2 बेटी है। साल 2015 में वह राखी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थी। वह अपने समूह की सारी गतिविधियों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती रही हैं। उनके पति गाँव में ही एक छोटी से गुमटी में किराना दुकान चलाते थे। इससे बमुश्किल परिवार का पालन–पोषण हो पाता था।

मैट्रिक तक पढ़ी–लिखी संगीता दीदी अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करना चाहती थी। लेकिन पर्याप्त पूँजी के अभाव में वह कुछ नहीं कर पा रही थी। ऐसे में उन्होंने अपनी इस समस्या को समूह की साप्ताहिक बैठक में रखा। उन्होंने किराना दुकान को बढ़ाने और पशुपालन करने का मन बनाया। वर्ष 2020 में समूह की दीदियों की सहमति के उपरांत इन्हें समूह से 80,000 रुपये ऋण दिया गया। इनमें से 50,000 रुपये में इन्होंने अपनी छोटी सी दुकान का विस्तार किया। इसके अलावा 30 हजार रुपये में एक गाय खरीदी। अब वह अपने पति के साथ मिलकर किराना दुकान चलाती है। साथ ही घर पर गाय पालन भी करती है। दुकान में किराना सामान के साथ–साथ सब्जियाँ, कोल्ड ड्रिंक और अन्य सामान भी बेचती है। धीरे –धीरे किराना दुकान से अच्छी आमदनी होने लगी है। संगीता देवी कहती है कि किराना दुकान से प्रति माह उन्हें 20,000 से 25,000 रुपये तक की आमदनी हो जाती है। वहीं गाय का दूध बेचने से भी प्रतिमाह 2000 से 3000 रुपये की आमदनी हो जाती है।

वह समूह एवं ग्राम संगठन की अन्य दीदियों को भी मेहनत और लगन से रोजगार करने के लिए प्रेरित करती है। संगीता दीदी अपने इस रोजगार से बहुत खुश है। वह आत्मनिर्भरता के साथ तरक्की की ओर कदम बढ़ा रही है।

कृषि उद्यमी बनकर बदल रही है अपनी जिंदगी

मुजफ्फरपुर जिला के कांटी प्रखंड स्थित मिठनसराय गाँव की रहने वाली रम्भा देवी अब एक कृषि उद्यमी के रूप में जानी जाती है। जीविका के माध्यम से विभिन्न प्रकार का प्रशिक्षण लेने के बाद वह स्वरोजगार करने को इच्छुक हुई। इसके बाद उन्होंने जीविका के सहयोग से अपना एक छोटा सा कारोबार शुरू किया। हालांकि अब वह एक छोटे व्यवसायी से कृषि उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बना ली है। वह गाँव में घूम–घूमकर किसानों को फसल और जैविक खाद के बारे में जानकारी देती है।

रम्भा देवी कहती है कि बालाजी जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के बाद उनकी जिन्दगी में बहुत बदलाव आया है। एक वक्त था जब वह घर में अकेले बैठी रहती थी। समाज में उनकी कोई पहचान नहीं थी। घर में हमेशा पैसों की तंगी बनी रहती थी। लेकिन जीविका समूह में जुड़ने के बाद उन्होंने अपना एक नया मुकाम हासिल किया है। तीन वर्ष पूर्व जीविका से एक लाख रुपये ऋण लेकर इन्होंने अपना कृषि उद्यम स्थापित किया था। अब इस दुकान की परिसंपति लगभग 5 लाख रुपये की हो चुकी है। आज वह खाद–बीज सहित कृषि संबंधी अन्य चीजों की बिक्री के साथ–साथ किसानों को कृषि तकनीक एवं जैविक विधि की जानकारी देती है। वह किसानों को जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित करती है। इस काम में उनके पति सुनील कुमार भी पूरा सहयोग करते हैं।

रम्भा दीदी बताती है कि खेती के मौसम में बहुत अच्छी बिक्री होती है। इस दौरान कुल मिलाकर तकरीबन 20 से 25 लाख रुपए का कारोबार कर लेती है। जिसकी बदौलत उन्हें पूरे साल में 2 से 3 लाख रुपए का मुनाफा हो जाता है। गाँव में रहकर वह किसानों को मदद करने के साथ–साथ खुद अच्छी आय भी अर्जित कर रही है। कृषि उद्यमी में रूप में कार्य करते हुए रम्भा का व्यक्तित्व काफी निखर गया है। उनका परिवार अब तरक्की की राह पर अग्रसर है।

जायका जीविका कृषि उत्पादक कम्पनी से सशक्त हो रही हैं किसान दीदियाँ

जीविका समूह से जुड़े छोटे एवं सीमांत किसानों को संगठित करने, उनका क्षमतावर्द्धन करने, किसानों के बीच आधुनिक तकनीक का प्रसार करने, खेती हेतु खाद–बीज एवं अन्य सामग्रियों की सुगम आपूर्ति करने, उनके उत्पादों को बेहतर मूल्य दिलाने तथा किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से जीविका महिला कृषि उत्पादक कंपनियों का गठन किया गया है। इन कंपनियों का संचालन पूरी तरह जीविका दीदियों द्वारा किया जा रहा है। इससे एक ओर जहाँ कंपनी से जुड़े किसानों को बिचौलियों से मुक्ति मिली है वहीं उनके उत्पादों को उचित कीमत मिल रही है एवं कंपनी को प्राप्त होने वाले लाभ का भी अंश उन्हें प्राप्त हो रहा है।

इसी कड़ी में मुंगेर जिला अन्तर्गत असरगंज प्रखंड में 'जायका जीविका कृषि उत्पादक कम्पनी लिमिटेड' का गठन किया गया है। इस उत्पादक कंपनी में कुल 503 शेयरधारक हैं। इनमें असरगंज, तारापुर, संग्रामपुर एवं हवेली खड़गपुर प्रखंड की जीविका दीदियाँ शामिल हैं। प्रत्येक महीने इस कंपनी की नियमित बैठक आयोजित की जाती है। इसके अलावा वर्ष में एक बार वार्षिक आम सभा आयोजित की जाती है। इसमें कंपनी से जुड़े सभी शेयर धारक शामिल होते हैं। इसके अलावा समय–समय पर किसान चौपाल के माध्यम से किसान दीदियों को खेती के नए वैज्ञानिक तरीके एवं अन्य तकनीक के बारे में प्रशिक्षित किया जाता है। कंपनी से जुड़े किसान परिवारों को विभिन्न प्रकार का लाभ दिया जा रहा है।

जायका जीविका कृषि उत्पादक कम्पनी का गठन निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ किया गया है–

- कंपनी से जुड़ी किसान दीदियों को खेती के लिए खाद एवं बीज उपलब्ध कराना।
- उत्पादक समूह के माध्यम से कंपनी से जुड़े किसान परिवारों का क्षमतावर्धन करना।
- बीज उत्पादन एवं उत्पादों का विपणन।
- कृषि उत्पादों को बड़े बाजार से जोड़कर सही कीमत दिलाना, जिससे छोटे और सीमांत किसानों की आय में वृद्धि हो सके।
- व्यापार तकनीक बढ़ाने के लिए विभिन्न तकनीकी अभिकरणों की उपलब्धता।

जायका जीविका कृषि उत्पादक कंपनी की विशेष पहल:– वित्तीय वर्ष 2023–24 में जायका जीविका कृषि उत्पादक कंपनी द्वारा एक विशेष पहल करते हुए जैव सुदृढ़ीकरण हेतु जिंक युक्त गेहूँ किसानों को उपलब्ध कराया गया। इसका मुख्य उद्देश्य दीदियों के बीच जिंक की कमी को दूर करना है। इसके अतिरिक्त कंपनी ने किसानों द्वारा उत्पादित अनाज, सरसों एवं मूंग का प्रसंस्करण करते हुए सरसों का तेल एवं मूंग का दाल तैयार करने का कार्य आरंभ किया। इससे कृषि उत्पादों का मूल्यवर्धन हुआ और किसानों को उनके उत्पादों की अधिक कीमत मिल रही है। इसके अलावा दीदियों को भी गुणवतापूर्ण सामान उपलब्ध हो रहा है। कंपनी द्वारा उत्पादित खाद्य सामग्रियों की बेहतर गुणवत्ता की वजह से इसकी मांग लगातार बढ़ रही है। वित्तीय वर्ष 2023–24 में मुंगेर के तारापुर प्रखंड में 7 टन जिंक युक्त गेहूँ किसान दीदियों के बीच उपलब्ध कराया गया। वित्तीय वर्ष 2023–24 में कंपनी के द्वारा कुल 24.91 लाख रुपये का कारोबार किया गया।

जायका जीविका कृषि उत्पादक कंपनी की व्यवसायिक विवरणी (वर्ष 2023–24)

वित्तीय वर्ष 2022–23 में कुल कारोबार (लाख रूपये में)	वित्तीय वर्ष 2023–24 में कुल कारोबार (लाख रूपये में)	वित्तीय वर्ष 2024–25 में अब तक कुल कारोबार (लाख रूपये में)
05.94	24.91	03.50

वित्तीय वर्ष 2024–25 की कार्य योजना

जायका जीविका कृषि उत्पादक कंपनी ने वित्तीय वर्ष 2024–25 के लिए अपनी कार्य योजना तैयार की है। इसके तहत जिले में संचालित सभी दीदी की रसोई तथा शिक्षण –सह –प्रशिक्षण केन्द्र में खाधान्न समाग्रियों की आपूर्ति करने की योजना बनाई है। इसमें मुख्य रूप से आटा, चावल, दाल, खाद्य तेल आदि उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा। इसके अलावा जिले में जीविका महिला ग्राम संगठनों द्वारा खाद्य सुरक्षा निधि के तहत की जाने वाली खाद्यान्न खरीदारी की प्रक्रिया में भाग लेने का निर्णय लिया गया है। इससे ग्राम संगठनों को अपेक्षाकृत उचित मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री उपलब्ध हो सकेगा।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार